

प्रारंभिक परीक्षा

कीलाडी उत्खनन

संदर्भ

संस्कृति मंत्रालय ने कहा है कि कीलाडी उत्खनन रिपोर्ट अभी तक तकनीकी रूप से पर्याप्त समर्थित नहीं है तथा इसके सत्यापन के लिए आगे और वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है।

कीलाडी उत्खनन -

- **अवस्थिति:** कीलाडी तमिलनाडु के शिवगंगा जिले में वैगई नदी के किनारे स्थित एक गांव है।
- **उत्खनन का इतिहास:** उत्खनन 2015 में शुरू हुआ, जिसे शुरू में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा किया गया था, और बाद में प्रशासनिक विवाद के बाद तमिलनाडु राज्य पुरातत्व विभाग ने इसे अपने हाथ में ले लिया।
- **खोजी गई कलाकृतियाँ:** 18,000 से अधिक कलाकृतियाँ खोजी गई हैं, जिनमें शामिल हैं:
 - मिट्टी के बर्तन और उत्कीर्णित बर्तन के टुकड़े
 - सोने के आभूषण और तांबे की वस्तुएं
 - अर्द्ध-कीमती पत्थर (जैसे एगेट और कार्नेलियन)
 - शंख और हाथीदांत की चीड़ियाँ
 - कांच के मोती, धुरी चक्र, टेराकोटा मुहरें, और बुनाई उपकरण
- **मिट्टी के बर्तन और शिलालेख:** 120 से अधिक बर्तनों के टुकड़ों पर तमिल ब्राह्मी शिलालेख अंकित हैं, जो इस क्षेत्र में साक्षरता की प्रारंभिक उपस्थिति और लिपि के उपयोग का संकेत देते हैं।
- **शहरी विशेषताएँ:** साक्ष्य बताते हैं कि कीलाडी एक सुव्यवस्थित शहरी बस्ती थी जिसमें औद्योगिक गतिविधियाँ थीं:
 - मिट्टी के बर्तन बनाना
 - बुनाई और रंगाई
 - मनका बनाना
- **व्यापार और जीवन शैली:**
 - मोतियों जैसी विलासिता की वस्तुओं की उपस्थिति व्यापार नेटवर्क का संकेत देती है।
 - पासा और हॉपस्कॉच के टुकड़ों की खोज मनोरंजक गतिविधियों को दर्शाती है।
- **कालानुक्रमिक महत्व:** यह स्थल संगम युग को लगभग **800 ईसा पूर्व तक ले जाता है**, जो एक उन्नत और प्रारंभिक तमिल सभ्यता का खुलासा करता है।
- **सांस्कृतिक संबंध:** कीलाडी में पाए गए कुछ प्रतीक सिंधु घाटी सभ्यता के प्रतीकों से मिलते जुलते हैं, हालांकि इनके बीच लगभग 1,000 वर्षों का कालानुक्रमिक अंतर मौजूद है।

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

कैंसर की सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली दवाएँ कौन सी हैं?

संदर्भ

- एक प्रमुख जांच से पता चला है कि **आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली कैंसर की दवाएं 100 से अधिक देशों में भेजे जाने से पहले गुणवत्ता परीक्षण में विफल हो गईं**, जिससे उनकी सुरक्षा और प्रभावशीलता के बारे में चिंताएं बढ़ गईं।
 - कैंसर कोशिकाओं को लक्षित करने के बावजूद, ये दवाएं गुर्दे की क्षति, प्रतिरक्षा दमन और हृदय संबंधी जोखिम जैसे गंभीर दुष्प्रभाव पैदा कर सकती हैं।

आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली कैंसर की दवाएँ और उनके प्रभाव –

- **सिसप्लाटिन (Cisplatin)**
 - प्रकार: प्लेटिनम-आधारित दवा
 - उपयोग: वृषण (टेस्टिकुलर), डिम्बग्रंथि (ओवेरियन), मूत्राशय (ब्लैडर), और फेफड़े (लंग) का कैंसर
 - क्रिया: कैंसर कोशिकाओं के डीएनए से जुड़कर कोशिका वृद्धि को रोकती है
 - दुष्प्रभाव: गुर्दे की क्षति, सुनने में कमी, प्रतिरक्षा दमन
- **ऑक्सालिप्लाटिन (Oxaliplatin)**
 - प्रकार: प्लेटिनम-आधारित दवा
 - उपयोग: कोलोरेक्टल कैंसर (विशेषकर सर्जरी के बाद)
 - क्रिया: कैंसर कोशिकाओं के डीएनए को क्षति पहुँचाती है
 - दुष्प्रभाव: सिसप्लाटिन के समान
- **साइक्लोफॉस्फैमाइड (Cyclophosphamide)**
 - प्रकार: कीमोथेरेपी दवा
 - उपयोग: स्तन कैंसर, ल्यूकेमिया, सार्कोमा, लिंफोमा
 - क्रिया: कैंसर कोशिकाओं के डीएनए को बाधित करती है, श्वेत रक्त कोशिकाओं को कम करती है
 - दुष्प्रभाव: प्रतिरक्षा दमन, मूत्राशय में सूजन
- **डॉक्सोर्बिसिन (Doxorubicin)**
 - प्रकार: एंटीबायोटिक-व्युत्पन्न कीमोथेरेपी दवा (उपनाम "रेड डेविल")
 - उपयोग: स्तन कैंसर, ल्यूकेमिया, लिंफोमा, सार्कोमा
 - क्रिया: डीएनए पुनरुत्पादन में हस्तक्षेप करती है
 - दुष्प्रभाव: हृदय की क्षति, बाल झड़ना, त्वचा समस्याएं, संक्रमण का खतरा
- **मेथोट्रेक्सेट (Methotrexate)**
 - प्रकार: कीमोथेरेपी और इम्यूनोसप्रेसेंट
 - उपयोग: ल्यूकेमिया, लिंफोमा और कुछ विशेष ट्यूमर
 - क्रिया: डीएनए संश्लेषण को रोकती है जिससे कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि रुकती है
 - दुष्प्रभाव: कोशिका क्षति (लीयूकोवोरिन द्वारा कम किया जा सकता है)
- **लीयूकोवोरिन (Leucovorin)**
 - प्रकार: फोलिनिन एसिड (विटामिन B9 का एक रूप)
 - उपयोग: मेथोट्रेक्सेट के साथ सहायक दवा
 - क्रिया: मेथोट्रेक्सेट की विषाक्तता से स्वस्थ कोशिकाओं की रक्षा करती है
 - नोट: तकनीकी रूप से यह कीमोथेरेपी दवा नहीं है

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

केंद्र ने आगरा में अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र की दक्षिण एशिया इकाई को मंजूरी दी

संदर्भ

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में उत्तर प्रदेश के आगरा में अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र (CIP) का दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (CSARC) स्थापित करने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र (CIP) के बारे में -

- **स्थापना:** 1971 में एक अनुसंधान-विकास संगठन के रूप में।
- **फोकस क्षेत्र:**
 - आलू
 - शकरकंद
 - एंडियन जड़ें और कंद
- **उद्देश्य:**
 - किफायती, पौष्टिक भोजन तक पहुंच में सुधार के लिए विज्ञान-आधारित समाधान प्रदान करना
 - टिकाऊ व्यवसाय और रोजगार वृद्धि को बढ़ावा देना
 - जड़ और कंद कृषि-खाद्य प्रणालियों की जलवायु लचीलापन बढ़ाना
- **वैश्विक सहयोग:**
 - CIP, CGIAR का एक हिस्सा है, जो खाद्य-सुरक्षित भविष्य के लिए एक वैश्विक अनुसंधान साझेदारी है।
 - CGIAR जलवायु संकट के बीच खाद्य, भूमि और जल प्रणालियों को बदलने पर ध्यान केंद्रित करता है।
 - अनुसंधान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों के सहयोग से 13 CGIAR केंद्रों/गठबंधनों द्वारा किया जाता है।
- **मुख्यालय:**
 - लीमा, पेरू में स्थित
 - CIP का अनुसंधान कार्य अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के 20 से अधिक देशों में है

भारत में आलू उत्पादन -

- **वैश्विक रैंक:** भारत आलू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है।
- **प्रमुख आलू उत्पादक राज्य:**
 - उत्तर प्रदेश
 - पश्चिम बंगाल
 - बिहार
 - गुजरात
 - मध्य प्रदेश
 - पंजाब
- **भारत में विद्यमान अनुसंधान संस्थान:**
 - **ICAR-CPRI** (केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान), शिमला – आलू अनुसंधान पर काम करता है
 - **ICAR-CTCRI** (केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान), तिरुवनंतपुरम – शकरकंद अनुसंधान पर केंद्रित है

स्रोत: [IndianExpress](#)

सलखन जीवाश्म पार्क (Salkhan Fossil Park)

संदर्भ

सलखन जीवाश्म पार्क को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की संभावित सूची में शामिल किया गया है।

सलखन जीवाश्म पार्क (सोनभद्र जीवाश्म पार्क) के बारे में -

- **अवस्थिति:** उत्तर प्रदेश में कैमूर वन्यजीव अभयारण्य और विंध्य पर्वत श्रृंखला के भीतर स्थित है।
- **भूवैज्ञानिक महत्व:**
 - इसमें 1.4 बिलियन वर्ष पुराने जीवाश्म मौजूद हैं, जो इसे विश्व में सबसे पुराने और सर्वोत्तम संरक्षित जीवाश्म स्थलों में से एक बनाता है।
 - इसमें स्ट्रोमेटोलाइट्स का एक असाधारण संग्रह है, जो साइनोबैक्टीरिया (नीले-हरे शैवाल) द्वारा निर्मित प्राचीन संरचनाएं हैं।
- **वैज्ञानिक महत्व:**
 - मेसोप्रोटोरोज़ोइक युग के स्ट्रोमेटोलाइट्स का घर, जिन्हें प्रारंभिक पृथ्वी के जीवित अवशेष माना जाता है।
 - शार्क बे (ऑस्ट्रेलिया) और येलोस्टोन (यूएसए) जैसे विश्व स्तर पर ज्ञात जीवाश्म स्थलों से भी पुराना।
 - महान ऑक्सीकरण घटना का साक्ष्य प्रदान करता है, जो पृथ्वी के जैविक विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।
- **पर्यावरण अंतर्दृष्टि:**
 - स्ट्रोमेटोलाइट रूपों (गुंबददार से स्तम्भाकार) की एक विस्तृत विविधता प्रदर्शित करता है, जो प्राचीन पर्यावरणीय बदलावों जैसे पानी की गहराई, लहर की क्रिया और अवसादन में परिवर्तन को दर्शाता है।
- **वैश्विक मान्यता:**
 - हाल ही में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की संभावित सूची में शामिल किया गया।
 - संरक्षित क्षेत्रों में भू-संरक्षण के लिए 2020 के दिशानिर्देशों में IUCN की 'जीवन के विकास (Evolution of Life)' की श्रेणी के अंतर्गत इसकी पहचान की गई है।

स्रोत: [TOI](#)

AI-संचालित उन्नत यातायात प्रबंधन प्रणाली

संदर्भ

भारत ने दिल्ली के द्वारका एक्सप्रेसवे और एनएच-48 पर यातायात की निगरानी, उल्लंघनों का पता लगाने और एआई कैमरों और वास्तविक समय अलर्ट का उपयोग करके सड़क सुरक्षा में सुधार करने के लिए अपनी पहली एआई-संचालित यातायात प्रबंधन प्रणाली शुरू की है।

एआई-संचालित यातायात प्रबंधन प्रणाली -

- **लॉन्च स्थान:** दिल्ली में द्वारका एक्सप्रेसवे और राष्ट्रीय राजमार्ग 48 (एनएच-48) का हिस्सा।
- **इसका कार्यान्वयन भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) द्वारा अपने डिजिटल राजमार्ग पहल के तहत किया गया है।**
- **प्रयुक्त तकनीक:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संचालित उन्नत यातायात प्रबंधन प्रणाली (ATMS)।
- **प्रणाली के घटक:**
 - वास्तविक समय निगरानी के लिए 110 हाई-रिज़ॉल्यूशन PTZ कैमरे।
 - एआई-आधारित स्वचालित घटना पहचान (एआईडी) प्रणाली।
 - नियम उल्लंघन का पता लगाने के लिए स्वचालित प्रवर्तन प्रणाली।
 - यात्रियों को वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करने के लिए परिवर्तनीय संदेश साइन बोर्ड (वीएमएस)।
 - स्पीड डिटेक्शन रडार और स्वचालित नंबर प्लेट पहचान (एएनपीआर) कैमरे।
 - यातायात डेटा विश्लेषण और निर्णय लेने के लिए केंद्रीय कमान और नियंत्रण केंद्र।
- **महत्वपूर्ण कार्य:**
 - यातायात प्रवाह और भीड़भाड़ की वास्तविक समय निगरानी।
 - दुर्घटनाओं, रुके हुए वाहनों, गलत दिशा में वाहन चलाने, तथा यातायात नियमों के उल्लंघन का स्वचालित पता लगाना।
 - त्वरित प्रतिक्रिया के लिए प्राधिकारियों को तत्काल अलर्ट।
 - उल्लंघनकर्ताओं के लिए स्वचालित चालान (जुर्माना नोटिस)।
- **लक्ष्य और प्रभाव:**
 - सड़क सुरक्षा और यातायात दक्षता में वृद्धि करना।
 - मैनुअल प्रवर्तन और मानवीय त्रुटि को कम करना।
 - पूरे भारत में स्मार्ट, डिजिटल राजमार्गों के विकास का समर्थन करना।
- **व्यापक दृष्टिकोण:**
 - एनएचएआई का लक्ष्य 5,000 किलोमीटर से अधिक राष्ट्रीय राजमार्गों को डिजिटल बुनियादी ढांचे और एआई-सक्षम यातायात प्रणालियों से लैस करना है।

स्रोत: [AnalyticsInDiamag](https://www.analyticsindiamag.com)

तानसेन

संदर्भ

हाल ही में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने हज़रत शेख मुहम्मद गौस की मजार पर धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन की अनुमति मांगने वाली याचिका को खारिज कर दिया, जहां ग्वालियर में संगीत के दिग्गज तानसेन की भी कब्र है।

तानसेन के बारे में -

- तानसेन कौन थे?
 - एक महान भारतीय शास्त्रीय संगीतकार, संगीतकार और गायक।
 - वह एक कुशल वाद्यवादक भी थे, जिन्हें मध्य एशियाई वाद्य यंत्र, **रबाब** को लोकप्रिय बनाने और परिष्कृत करने के लिए जाना जाता है।
- प्रारंभिक संरक्षण:
 - शुरू में शेरशाह सूरी के बेटे दौलत खान की सेवा की।
 - बाद में बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र के दरबारी गायक बन गए।
- मुगल जुड़ाव:
 - सम्राट अकबर के दरबार में आमंत्रित किये गये और उनके नवरत्नों में से एक बने।
 - अकबर ने उन्हें "मियां" की उपाधि से सम्मानित किया, जिसका अर्थ होता है एक विद्वान या सम्मानित व्यक्ति।
- संगीत विरासत:
 - तानसेन को रागों को बनाने या लोकप्रिय बनाने का श्रेय उन्हें दिया जाता है, जिनमें शामिल हैं:
 - मियाँ की मल्हार
 - मियाँ की टोड़ी
 - दरबारी कनडा
 - वह अपनी ध्रुपद रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं, जो शास्त्रीय गायन संगीत का एक रूप है।



स्रोत: [IndianExpress](https://www.indianexpress.com)

समाचार संक्षेप में

भारत मध्यस्थता अभियान (India Mediation Campaign)

समाचार?

'राष्ट्र के लिए मध्यस्थता' शीर्षक से अखिल भारतीय मध्यस्थता अभियान शुरू किया जाएगा।

90 दिवसीय अखिल भारतीय मध्यस्थता अभियान -

- अवधि: 1 जुलाई 2025 - 30 सितंबर 2025
- उद्देश्य: मुकदमेबाजी के तीव्र एवं सौहार्दपूर्ण विकल्प के रूप में तालुका स्तर की अदालतों से लेकर उच्च न्यायालयों तक मध्यस्थता के माध्यम से लंबित अदालती मामलों का समाधान करना।
- आयोजक:
 - राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA)
 - सर्वोच्च न्यायालय की मध्यस्थता और सुलह परियोजना समिति (MCPC)
- पहुँच:
 - कार्यवाही ऑफ़लाइन, ऑनलाइन या हाइब्रिड मोड में आयोजित की जा सकती है
 - देश के हर कोने तक पहुंचने के लिए डिज़ाइन किया गया

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

मेंड्राची वनचाराई प्रणाली

समाचार?

आईआईटी बॉम्बे के एक शोधकर्ता ने पाया है कि औपनिवेशिक युग के भूमि सुधारों के कारण महाराष्ट्र की मेंड्राची वनचाराई प्रणाली लुप्त हो गई।

प्रणाली के बारे में -

- इस प्रणाली ने खानाबदोश चरवाहों (मुख्य रूप से धनगर और अन्य पशुपालक समुदायों) को अपने पशुओं को बंजर भूमि, जंगलों और सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के विशाल विस्तार में चराने में सक्षम बनाया।
- चारागाह गांव की सीमाओं तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि नदी के किनारों जैसी प्राकृतिक विशेषताओं द्वारा परिभाषित थे, जो जिलों में व्यापक "चारागाह गलियारे" बनाते थे।
- चरवाहे इन चारागाहों तक पहुंच और उपयोग के अधिकार के लिए स्थानीय प्राधिकारियों को शुल्क या कर (मक्ता) का भुगतान करते थे।
- यह प्रणाली औपचारिक और संस्थागत थी, प्रशासनिक दस्तावेजों (जैसे पेशवा डायरियों) में दर्ज थी और क्षेत्रीय शासकों द्वारा मान्यता प्राप्त थी।
- कठोर प्रशासनिक नियमों के बजाय बातचीत से हुए समझौतों पर आधारित थी।
- गतिशीलता कानूनी और वैध थी; चरवाहे किसी भी कानून का उल्लंघन किए बिना मौसमी रूप से घूमते थे, जब तक कि बकाया राशि का भुगतान किया जाता था।

ब्रिटिश शासन में क्या हुआ?

- ब्रिटिश औपनिवेशिक भूमि सुधारों (विशेष रूप से सर्वेक्षण और निपटान अधिनियम, 1865) ने इन गलियारों को समाप्त कर दिया और उनके स्थान पर निश्चित, गांव-आधारित चारागाह भूमि स्थापित कर दी।
- परिणाम: खानाबदोश गतिशीलता का अपराधीकरण और सामुदायिक चारागाह प्रबंधन में गिरावट।
- पशुपालकों के परम्परागत अधिकार समाप्त हो गए, जिससे उनकी पारंपरिक आजीविका और सार्वजनिक भूमि के प्रशासन पर असर पड़ा।

स्रोत: [The Hindu](https://www.thehindu.com)

संपादकीय सारांश

एआई प्रसार को प्रबंधित करने की अमेरिका की योजना को समझना

संदर्भ

- संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा एआई डिफ्यूजन फ्रेमवर्क को वापस लेने की घोषणा को एक अच्छी बात के रूप में देखा गया है।
 - हालाँकि, हाल के घटनाक्रमों से पता चलता है कि एआई पर नियंत्रण जारी रहने की संभावना है, यद्यपि विभिन्न रूपों में।

एआई निर्यात नियंत्रण के प्रति अमेरिकी दृष्टिकोण -

- हार्डवेयर पर निर्यात नियंत्रण:** उन्नत एआई चिप्स के निर्यात पर प्रतिबंध लगाए गए - जैसे एनवीडिया के ए100, एच100, आदि - विशेष रूप से चीन, रूस और कुछ अन्य देशों में।
 - भौतिक हार्डवेयर (जीपीयू, टीपीयू) और, तेजी से, एआई मॉडल वजन और सॉफ्टवेयर दोनों को नियंत्रित किया।
- एआई डिफ्यूजन फ्रेमवर्क(2024):** एआई को परमाणु तकनीक की तरह दोहरे उपयोग (नागरिक + सैन्य) तकनीक के रूप में मानने का प्रस्ताव।
 - विरोधियों के लिए प्रतिबंध, सहयोगियों के लिए तरजीही व्यवहार, तथा अन्य के लिए प्रतिबंध लागू किए गए।
 - निर्यात नियंत्रण प्रक्रियाओं को केंद्रीकृत और मानकीकृत करने का प्रयास किया गया, ताकि उन्हें अधिक पूर्वानुमानित तथा अधिक व्यापक बनाया जा सके।
- तकनीकी एवं विधायी नवाचार:** ऑन-चिप सुविधाओं की खोज: हार्डवेयर-एम्बेडेड ट्रेकिंग और प्रतिबंध (जैसे, स्थान ट्रेकिंग, उपयोग निगरानी)।
 - अवैध डायवर्जन को रोकने के लिए एआई चिप्स के लिए अंतर्निहित नियंत्रण को अनिवार्य करने के लिए नए कानून।

अमेरिकी एआई निर्यात नियंत्रण के परिणाम -

- अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया:** मित्र राष्ट्रों ने विवशता और अविश्वास महसूस किया, जिससे उन्हें अपनी स्वयं की एआई और अर्थचालक रणनीतियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा मिली।
 - वैश्विक स्तर पर प्रौद्योगिकी नीति को "निर्देशित" करने की अमेरिकी इच्छा की धारणा।
- विकल्पों के लिए प्रोत्साहन:** प्रतिद्वंद्वियों (विशेष रूप से चीन) ने घरेलू चिप और एआई मॉडल नवाचार के लिए अपने प्रयास को तेज कर दिया।
 - उदाहरण:** चीन के डीपसीक आर1 ने हार्डवेयर प्रतिबंधों को दरकिनार करते हुए, कम कंप्यूटिंग शक्ति का उपयोग करते हुए, शीर्ष अमेरिकी मॉडलों को टक्कर दी।
- नवप्रवर्तन में बदलाव:** वैश्विक अनुसंधान ने अमेरिकी नियंत्रणों से बचने के लिए कम कम्प्यूट आवश्यकताओं वाले कुशल एआई मॉडल विकसित करने की ओर रुख किया।
 - प्रौद्योगिकी के अनुकूलन के कारण निर्यात नियंत्रण कम प्रभावी हो गया।
- विखंडन:** वैश्विक एआई पारिस्थितिकी तंत्र का विखंडन, क्योंकि अधिक देश "तकनीकी संप्रभुता" की मांग कर रहे हैं।
 - विश्व भर में एआई शोधकर्ताओं के बीच सहयोग और अंतरसंचालनीयता में कमी।
- निजता और विश्वास संबंधी चिंताएं:** ऑन-चिप निगरानी सुविधाओं के कारण निजता, दुरुपयोग और उपयोगकर्ता की स्वायत्तता की हानि संबंधी चिंताएं उत्पन्न हुईं।
 - अमेरिकी मूल की प्रौद्योगिकी के प्रति संदेह बढ़ा।

अमेरिकी एआई निर्यात नियंत्रण के निहितार्थ -

- **भू-राजनीतिक पुनर्संरक्षण:** मित्र राष्ट्रों ने अपनी बाजी सुरक्षित कर ली है, अमेरिकी तकनीक पर निर्भरता कम कर दी है और नई साझेदारियों की संभावनाएं तलाश ली हैं (जैसे, यूरोपीय संघ, भारत)।
 - स्वतंत्र एआई और चिप पारिस्थितिकी तंत्र के लिए वैश्विक प्रयास को बढ़ावा दिया।
- **अमेरिकी प्रौद्योगिकी नेतृत्व का क्षरण:** एआई को "बाड़ में रखने" के प्रयास अन्यत्र नवाचार को बढ़ावा दे सकते हैं।
 - अमेरिका को वैश्विक एआई मानकों और अनुसंधान नेटवर्क में अपना प्रभाव खोने का खतरा है।
- **सुरक्षा बनाम खुलेपन की दुविधा:** सुरक्षा के लिए किए गए कड़े नियंत्रण खुले वैज्ञानिक सहयोग को कमजोर कर सकते हैं, जिससे सामूहिक प्रगति धीमी हो सकती है।
 - सुरक्षा लाभ की तुलना में अति-विनियमन का जोखिम अधिक है।
- **कानूनी और नैतिक जोखिम:** निगरानी और ट्रैकिंग उपाय अन्य देशों के स्थानीय निजता कानूनों और नैतिक मानदंडों के साथ टकराव में आ सकते हैं।
 - विरोधियों और सहयोगियों दोनों की ओर से कानूनी चुनौतियाँ और प्रतिरोध।
- **भारत और मध्यम शक्तियाँ:** भारत जैसे देशों को "विश्वसनीय सहयोगी" नहीं माना जाता है, इसलिए उन्हें अत्याधुनिक एआई से बाहर रखे जाने का खतरा है।
 - ऐसे देशों को आत्मनिर्भरता और प्रौद्योगिकी के वैकल्पिक स्रोतों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

स्रोत: [The Hindu](https://www.thehindu.com)



भारत में गरीबी का सच

संदर्भ

हाल की रिपोर्टों, जिनमें विश्व बैंक की "गरीबी और समानता संक्षिप्त" (अप्रैल 2025) और उसके बाद के अद्यतन शामिल हैं, ने उल्लेखनीय प्रगति का दावा किया है: गरीबी में जीवन यापन करने वाले भारतीयों का अनुपात काफी हद तक कम हो गया है। फिर भी, इन आंकड़ों का वास्तव में क्या अर्थ है — और हम गरीबी को कैसे परिभाषित करते हैं — इस पर अभी भी गंभीर बहस जारी है।

भारत में गरीबी पर विश्व बैंक के आंकड़े -

- **विश्व बैंक के हालिया निष्कर्ष (2025):**
 - भारत की अत्यधिक गरीबी दर 2022-23 में घटकर 5.75% हो गयी, जो 2011-12 में 27% थी।
 - कुल मिलाकर, पिछले दशक में लगभग 171 मिलियन लोग अत्यधिक गरीबी से बाहर निकले।
 - नवीनतम गरीबी रेखा 3 डॉलर प्रतिदिन (पीपीपी आधार) है, जो भारत में 62 रुपये प्रतिदिन के बराबर है (20.6 पीपीपी रूपांतरण दर का उपयोग करते हुए)।
 - अतीत में, विश्व बैंक ने ऐतिहासिक गरीबी दरों को भी संशोधित कर नीचे की ओर बढ़ाया था; उदाहरण के लिए, 1977-78 की गरीबी दर, जो पहले 64% अनुमानित थी, अब 47% आंकी गई है।

गरीबी को परिभाषित करना क्यों आवश्यक है?

- **नीति लक्ष्यीकरण:** यह पहचान करता है कि किसे कल्याण की आवश्यकता है और किस सीमा तक।
- **संसाधन आवंटन:** यह निर्धारित करता है कि सरकारी धन और सब्सिडी कैसे वितरित की जाएगी।
- **नीति प्रभाव का मूल्यांकन:** यह आकलन करने की अनुमति देता है कि क्या हस्तक्षेप (जैसे, पीडीएस, मनरेगा) प्रभावी हैं।
- **सामाजिक न्याय:** हाशिए पर पड़े समूहों में वंचना को पहचानने और उसका समाधान करने में सहायता करता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्टिंग:** सतत विकास लक्ष्यों और वैश्विक प्रतिबद्धताओं की दिशा में प्रगति पर नज़र रखने के लिए आवश्यक।

भारत विश्व बैंक के गरीबी अनुमानों का उपयोग क्यों करता है?

- **पुरानी घरेलू गरीबी रेखा:** भारत की आखिरी आधिकारिक गरीबी रेखा 2011-12 में तेंदुलकर समिति की सिफारिशों के आधार पर तय की गई थी। तब से, कोई नई आधिकारिक पद्धति नहीं अपनाई गई है, जिससे घरेलू माप में एक शून्यता आ गई है।
- **डेटा संग्रहण में बदलाव:** डेटा संग्रहण विधियों (जैसे, घरेलू सर्वेक्षण, उपभोग डेटा) में अंतराल और परिवर्तनों ने राष्ट्रीय स्तर पर गरीबी का लगातार अनुमान लगाना कठिन बना दिया है।
- **अंतर्राष्ट्रीय तुलना:** विश्व बैंक के अनुमान वैश्विक तुलना और अंतर्राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के साथ संरेखण की अनुमति देते हैं।
- **वैकल्पिक सूचकांक:** भारत ने नीति आयोग बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) विकसित किया है, लेकिन यह आय से परे अभावों (जैसे, स्वास्थ्य, शिक्षा) को मापता है और यह पारंपरिक आय/उपभोग गरीबी रेखाओं से मौलिक रूप से अलग है।

गरीबी को परिभाषित करने से जुड़े मुद्दे -

- **संदर्भगत भिन्नता:** गरीबी एक संदर्भ-संवेदनशील अवधारणा है; एक समय/स्थान पर जो चीज गरीबी मानी जाती है, वह दूसरे समय/स्थान पर गरीबी नहीं मानी जा सकती।
- **मुद्रा एवं पीपीपी भ्रम:** कई लोग गरीबी रेखा रूपांतरण (पीपीपी के बजाय बाजार विनिमय का उपयोग) को गलत समझते हैं।

- **कट-ऑफ की मनमानी:** गरीबी रेखा में छोटे-छोटे परिवर्तन से रिपोर्ट की गई गरीबी दर में बड़ा उतार-चढ़ाव हो सकता है।
- **डेटा की सीमाएं:** समय पर, मजबूत घरेलू उपभोग डेटा की कमी से अनुमान गलत साबित होते हैं।
- **अनुमानों की बहुलता:** रेखा और विधि के आधार पर, भारत में गरीबी दर 2% से लेकर 82% तक हो सकती है।
- **राजनीतिक और सामाजिक निहितार्थ:** गरीबी का कम या अधिक आकलन नीतिगत प्राथमिकताओं, संसाधन आवंटन और सामाजिक कल्याण योजनाओं को प्रभावित करता है।

भारत में गरीबी आकलन पर प्रमुख समितियाँ -

समिति/पैनल	वर्ष	मुख्य अनुशासण	गरीबी रेखा (शहरी/ग्रामीण)
अलघ समिति	1979	पहली आधिकारिक गरीबी रेखा	उपभोग के आधार पर
लकड़वाला समिति	1993	कार्यप्रणाली, मूल्य स्तर अद्यतन करें	उपभोग के आधार पर
तेंदुलकर समिति	2009	मिश्रित संदर्भ अवधि, नई बास्केट में बदलाव	29/22 रुपये (शहरी/ग्रामीण, 2009)
रंगराजन समिति	2014	सीमा बढ़ाई गई, व्यापक आवश्यकताओं को शामिल किया गया	47/33 रुपये (शहरी/ग्रामीण, 2014)

क्या किया जा सकता है?

- **कार्यप्रणाली को अद्यतन और मानकीकृत करना:** वर्तमान उपभोग पैटर्न और आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करने वाली एक नई, पारदर्शी गरीबी रेखा स्थापित करना।
- **डेटा की गुणवत्ता में सुधार:** नियमित, व्यापक घरेलू उपभोग सर्वेक्षणों को पुनः शुरू करना और उनमें वृद्धि करना।
- **बहुआयामी सूचकांक अपनाना:** समग्र चित्र के लिए आय-आधारित रेखाओं को बहुआयामी दृष्टिकोणों (जैसे एमपीआई) के साथ संयोजित करना।
- **संदर्भीकरण:** गरीबी की ऐसी सीमाएं निर्धारित करना जो भारत में जीवन-यापन की क्षेत्रीय लागत में अंतर को प्रतिबिंबित करें।
- **नियमित संशोधन:** बदलती आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए गरीबी रेखाओं के आवधिक संशोधन को संस्थागत बनाना।
- **संचार और साक्षरता:** जनता में भ्रम की स्थिति से बचने के लिए गरीबी रेखा के अर्थ और निहितार्थ को स्पष्ट रूप से समझाएं।

स्रोत: [Indian Express](#)